.. shrIkRiShNAShTakam 5 ..

॥ श्रीकृष्णाष्टकम् ५ ॥

Document Information

Text title : kRiShNAShTakam 5 madhwamAnasa

File name : krishna8-5.itx

Category : aShTaka

Location : doc_vishhnu

Author : vAdirAja

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/religion madhva

Transliterated by : http://madhva.org

Proofread by : Ambarish Srivastava (j_ambarish at yahoo.chom)

Latest update : November 27, 2001

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : http://sanskritdocuments.org

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

August 2, 2016

sanskritdocuments.org

॥ श्रीकृष्णाष्टकम् ५ ॥

(श्री वादिराज तीर्थ कृतम्)
॥ अथ श्री कृष्णाष्टकम् ॥

मध्वमानसपद्मभानुसमम् स्मर प्रतिसंस्मरम्
स्निग्धनिर्मलशीतकान्तिलसन्मुखम् करुणोन्मुखम् ।
हृदयकम्बुसमानकन्धरमक्षयम् दुरितक्षयम्
स्निग्धसंस्तुत रौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ १॥

अंगदादिसुशोभिपाणियुगेन सम्क्षुभितैनसम्
तुंगमाल्यमणीन्द्रहारसरोरसम् खलनीरसम् ।
मंगलप्रदमन्थदामविराजितम् भजताजितम्
तम् गृणेवररौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ २॥

पीनरम्यतनूदरम् भज हे मनः शुभ हे मनः
स्वानुभावनिदर्शनाय दिशन्तमार्थिशु शन्तमम् ।
आनतोस्मि निजार्जुनप्रियसाधकम् खलबाधकम्
हीनतोज्झितरौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ ३॥

हेमकिंकिणिमालिकारसनांचितम् तमवंचितम्
रत्नकांचनवस्त्रचित्रकटिम् घनप्रभया घनम् ।
कम्रनागकरोपमूरुमनामयम् शुभधीमयम्
नौम्यहम् वररौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ ४॥

वृत्तजानुमनोजजंघममोहदम् परमोहदम्
रत्नकल्पनखत्विशा हृतमुत्तमः स्तुतिमुत्तमम् ।
प्रत्यहम् रचितार्चनम् रमया स्वयागतया स्वयम्
चित्त चिन्तय रौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ ५ ॥

चारुपादसरोजयुग्मरुचामरोच्चयचामरो
दारमूर्धजभारमन्दलरंजकम् कलिभंजकम् ।
वीरतोचितभूशणम् वरनूपुरम् स्वतनूपुरम्
धारयात्मनि रौप्यपीठ कृतलयम् हरिमालयम् ॥ ६ ॥

शुष्कवादिमनोतिदूरतरागमोत्सवदागमम्
सत्कवीन्द्रवचोविलासमहोदयम् महितोदयम् ।
लक्षयामि यतीस्वरैः कृतपूजनम् गुणभाजनम्
धिक्कृतोपमरौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ ७ ॥

नारदप्रियमाविशाम्बुरुहेक्क्षणम् निजलक्षणम्

द्वारकोपमचारुदीपरुचान्तरे गतचिन्त रे ।
(तारकोपमचारुदीपरुचान्तरे गतचिन्त रे ।)
धीरमानसपूर्णचन्द्रसमानमच्युतमानम
द्वारकोपमरौप्यपीठकृतालयम् हरिमालयम् ॥ ८ ॥

फल-श्रुतिः
रौप्यपीठकृतालयस्य हरेः प्रियम् दुरिताप्रियम्
तत्पदार्चकवादिराजयतीरितम् गुणपूरितम् ।
गोप्यमष्टकमेतदुच्चमुदे मम त्विह निर्मम-
(गोप्यमष्टकमेतदुच्चमुदे भवत्विह निर्मम-)
प्राप्यशुद्धफलाय तत्र सुकोमलम् हतधीमलम्
प्राप्यसौख्यफलाय तत्र सुकोमलम् हतधीमलम् ॥ ९ ॥

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

From http://madhva.org/
proofread by Ambarish Srivastava (j_ambarish@yahoo.com)

.. shrIkRiShNAShTakam 5 ..
was typeset on August 2, 2016

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*